पाठ 6. अन्य मात्राएँ

इस पाठ में अनुस्वार व अनुनासिक का ज्ञान दिया जाएगा। बच्चों के वाचन कौशल का विकास होगा। वे प्रश्नों के उत्तर देना सीखेंगे। उनका सामान्य ज्ञान बढ़ेगा। मनोरंजक पाठ पढ़कर भाषा के प्रति उनकी रुचि जागेगी।

अनुस्वार (ं)

अनुस्वार–'अनुस्वार' शब्द से ही स्पष्ट है कि इसमें पहले स्वर आता है और बाद में नासिक्य व्यंजन। अनुस्वार का उच्चारण भिन्न-भिन्न होता है। यह जिस स्पर्श व्यंजन से पूर्व आता है, उसी व्यंजन के वर्ग में आने वाले नासिक्य व्यंजन के रूप में इसका उच्चारण होता है। अर्थात कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग में इसकी आवाज़ में बदलाव आ जाता है। जैसे – रंक - रङ्क में ङ्, शंख - शङ्ख में ङ्, चंचल - चञ्चल में ञ्, कुंज - कुञ्ज में ञ्, घंटा - घण्टा में ण्, डंडा - डण्डा में ण्, दंत - दन्त में न्, बंद - बन्द में न्, चंपक - चम्पक में म्, अंबर - अम्बर में म्, खंभा - खम्भा में म्।

हिंदी को सरल बनाने तथा कंप्यूटर आदि यंत्रों के प्रयोग के कारण अब यह नियम बन गया है कि उपर्युक्त भिन्न-भिन्न नासिक्य व्यंजनों की जगह बिंदु प्रयोग किया जाए।

अनुस्वार का उच्चारण सिखाते समय यह ध्यान रहे कि बच्चे बहुत छोटे हैं अत: नियमों की बात न करके केवल उच्चारण पर ही ध्यान दिलाएँ। श्यामपट्ट पर झंडा और शंख का चित्र बनाकर उनके नाम लिखें। शब्द का उच्चारण करते समय अनुस्वार पर बल दें।

पाठ में दिए गए चित्रों को बच्चों को दिखाएँ तथा उनके नीचे दिए नामों का उच्चारण करें। बच्चों से रिक्त स्थानों को पूरा करने को कहें। 'अं' के प्रयोग वाले इन शब्दों को बोल-बोलकर 'अं' के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाएँ। इन्हीं शब्दों को कॉपी में लिखवाएँ।

जंगल में मंगल

कहानी का कक्षा में हाव-भाव सहित वाचन करें। अब तक बच्चे सभी मात्राएँ सीख चुके हैं। इस पाठ को बच्चों से भी पढ़वाएँ। पाठ पढ़ते व पढ़ाते समय बच्चों को 'अं' अनुस्वार की मात्रा वाले शब्दों को रेखांकित करने को कहें।

कहानी को पढ़वाने के बाद कहानी से संबंधित प्रश्न कर बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा दें और जानें कि वह पाठ को कितना समझ पाए। जैसे – कौन-कौन और कहाँ घूमने गए? सामने क्या दिखाई दिया? उन्होंने बच्चों को क्या खिलाया?

चंद्रबिंदु (ँ)

चंद्रबिंदु को अनुनासिक स्वर कहते हैं। इसका उच्चारण हमेशा किसी स्वर के साथ ही होता है। बच्चों को इसके उच्चारण से परिचित करवाने के लिए आँचल, आँगन, आँवला शब्दों को कक्षा में बार-बार दोहराएँ।

पाठ में दिए गए शब्दों को दिखाकर उनके नीचे दिए नामों का शुद्ध उच्चारणसहित वाचन स्वयं भी करें तथा बच्चों से भी करवाएँ। ध्यान रहे, बच्चों को प्रत्येक शब्द का उच्चारण बताते समय शुद्धता पर विशेष ध्यान दें। सभी शब्दों को दो-दो बार उच्चारण करते हुए कॉपी में

लिखने को कहें। सुंदर लेखन पर बच्चों की प्रशंसा कर उन्हें प्रोत्साहित अवश्य करें।

कुएँ का साँप

कहानी का कक्षा में वाचन करें। चंद्रबिंदु वाले शब्दों पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। कहानी की समाप्ति पर बच्चों से इसी पर आधारित कुछ प्रश्न पूछें। बच्चों से कक्षा में कहानी के किसी अंश को सुनाने को कहें। कहानी में क्या पसंद आया, इस विषय पर भी कक्षा में चर्चा करें। पाठ में आए कठिन शब्दों को कॉपी में तीन-तीन बार लिखने को कहें। कठिन शब्दों के अर्थ भी बच्चों को समझाएँ। सूखा पड़ना क्या होता है? ठिकाना बना लेने का अर्थ क्या होता है?

विसर्ग (:)

बच्चों को विसर्ग (:) की केवल जानकारी दें। दिए गए शब्दों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें। बच्चों से इन शब्दों को पढ़वाएँ।

बच्चों को यह बताएँ कि विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह' के समान होता है। दिए गए वाक्यों को सुलेख सहित रिक्त स्थान में लिखने को कहें।